सहभागिता

हम लोक परमेश्वर के वचन के अनुसार चालनेवाले हैं,ईसलिऐ हम विना मिलावट परमेश्वर के वचव य पवित्र साश्त्र बाईबल को अच्छी तराह से शिखाते हैं।हम इस अध्याय में बाईबल की शिक्षा के अनुसार सहभागिता के बारे में अध्ययन करेंगे ।पवित्र शास्त्र बाईबल के अनुसार सहभागिता का अर्थ कुछ इस प्रकार है,**पहला**-सहभागिता का अर्थ परमेश्वर और मनुष्यओं का मिलन य संगति है जो कलिसीया के नाम से भी जानी जाति है ।

हमारे सहभागिता परमेशवर के साथ है, हम पवित्र आत्मा की सामर्थ से परमेश्वर पर विश्वास करते uहै ।बाईबल हमें शिखाति है की प्रभु यीशु हमारा mउधारक है,वह अपने आप को क्रुश में वलीदान के रुप में अर्पण करके हमे परमेश्वर से मिलाया ।हम दुनिया में कलिसीया जो प्रभु यीशु की सरीर के नाम से जाना जाति है, उसका एक एक अंग है ।**दुसरा**-पवित्र प्रभु-भोज की संस्कार में कलिसीया की विश्ववासीऔंका सहभागिता संपुर्ण रुप से प्रगट होता है ।प्रेरीत पौलुस कुरुन्थीयों के नाम अपनी पहला पत्री में पवित्र प्रभु-भोज की संस्कार में कलिसीया की विश्ववासीऔंका सहभागिता के बारे में लिखता है ।**तिसरा-** सहभागिता सिर्फ एक साधारण धर्मिक शब्द नही है, वरन वह तो अनेक दिलों की मिलन का प्रगटीकरण है ।**आखिरमें-** हमारे विच् सहभागिता का अर्थ है, आत्मा में एक होना और सुसमाचार के प्रचार का काम में भाग लेना है।

हमारा अनुग्रहकारी परमेश्वर करे की हमारे विच और उनके साथ बाईबल के अनुसार जो सहभागिता है वह अंत तक वनी रहे।1.**हमारे प्रभु यीशु मसीह की क्रुश में सहभागिता** । सहभागिता नामक शब्द नया नियम में लगभग उनिस बार देखा जा सकता है ।बाईबल में सहभागिता अर्थ है,संगति,संगठन,अंशलेना य भाग लेना ईत्यादि।प्रेरीतों के कामों 2.42 में पढ़ते है-और वे प्रारितों से शिक्षा पाने,और संगति रखने, और रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लौलीन रहे ।इस वचन में हम पढ़ते हैं,सहभागिता कामकार्य है।सहभागिता का अर्थ यह नहीं है कि, किस एक व्कति का नाम कलिसीया की किताव में या तालिका में लिखा जाए ।हम अपनी कुछ लोगों का नाम हमारे कलिसीया के सदश्यों का तालिका से निकाल देते है, इसलिए कि वे हमारे साथ संपूर्ण सहभागिता नहीं रखते। कलिसीया की सदश्यों के तालिका में नाम लिखा जाना कोई वड़ी वात नहीं है,वरन परमेश्वर तथा उसके पुत्र हमारे प्रभु यीसु मसीह तथा जगत में परमेश्वर के संतानो के साथ संगति रखना वहत बड़ा कठिन काम है।हमारे सहभागिता कफी के लिए जैसे साधारण वात नहीं हैं, वरन यह बाईबल के वचन के अनुसार एक महत्वपुर्ण तथा कठिन काम है।हम ने प्रेरितों 2.42 में पढ़ा कि जरुशालेम के कलिसीया के लोग सहभागिता के लिए अपने अपको अर्पित कर दिया परमेंश्वर के साथ सहभागिता रखना उसका वचन के द्वरा ही संभव होता है, क्योकि

विश्वास सुनने से और सुनना परमेशवर का वचन से होता है।परमेश्वर का वचन का आज्ञाकारी वनना ही विश्वास की नीव है,जहां आज्ञाकारीता नही है, वहां विश्वास अल्फ विश्वास तथा न बढ़नेवाला विश्वास है, वहा सही सहभागिता सम्भव नही है।जहां परमेश्वर का वचन का उलंघन है, वहां विश्वास दुर्बल है ,जहां विश्वास दुर्बल वहा सही सहभागिता सम्भव नहीं है।जहां परमेश्वर का वचन नहीं वहां सहभागिता नहीं, यह सत्य है ।जव हम पवित्र शात्र का अध्ययन लगातर करते हैं, तब हमारा विश्वास बढ़ता है साथ साथ परमेश्वर के साथ हमारा सहभागिता घनिष्ठता से और अधिक धनिष्ठता की और बढ़ता हैं ।

परमेंश्वर के वचन के अनुसार बहुत से लोक पानी से पवित्र बप्तिस्मा की संस्कार के द्वारा परमेशवर साथ सहभागिता में प्रवेश करते हैं ।1कुरिन्थिय 1.9 में लिखा हैं,परमेशवर सच्चा है, जिसने तुमको अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया हैं।पवित्र आत्मा सुसमाचार के द्वारा मुझे वुलाया,अपनी वरदानों के द्वारा मुझे प्रकासित किया हैं,मुझे पवित्र बनाकर पवित्र वचन के अनुसार सच्चा विश्वास में मुझे स्थिर रथकर मेरा अगवाई करता हैं,जैसे मुझे ऐसै ही संसार के सब लोगों को पवित्र आत्मा सुसमाचार के द्वारा पवित्र कलिसीया में अपनी सहभागिता में पहले बुलाता हैं और वाद में प्रकाशित करता हैं,पवित्र बनाता हैं,सच्चा विश्वास स्थिर रखकर सबका अगवाई करता हैं।हमारे प्रभु यीसु मसीह के सरीर के नाम से बुलाया जानेवाली कलिसीया को प्रभु यीशु में पवित्र आत्मा पवित्र परमेश्वर के वचन के अनुसार सच्चा विश्वास में स्थिर रखता हैं और पुरे दुनिया में कलिसीया को परमेश्वर की सहभागिता में वनाये रखकर उसका अगवाई करता हैं ।इस सहभागिता के मुख्य विषय यह है की,परमेश्वर अपनी पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह में हमको अपनी सहभागिता के लिए बुलाता हैं।हमारे प्रभु यीशु मसीह ही हमारे विश्वास का नीव हैं।उसके विना हमारा छुट्कारा संभव नहीं हैं।जहां प्रभु यीशु मसीह नहीं हैं,वहां कलिसीया नहीं हैं।जहां कलिसीया नहीं वहां सहभागिता,आशा तथा विश्वास का नामो निशाना भी नही होता। प्रेरित युहन्ना अपनी पत्री में सही सहभागिता के बारे में लिखता हैं,1युहन्ना1.3में –जो कुछ हमने देखा है और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं,इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो,और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ हैं।हमारे मसीह धर्म का चिन्ह क्रुश,पिता और पुत्र के साथ हमारी सहभागिता को प्रकट करता हैं। प्रेरित युहन्ना लिखता हैं,हम सुनाते हैं,इसका मतलव हैं,सुसमाचार सुनाने के द्वारा पवित्र आत्मा के शक्ति से पिता और पुत्र के साथ हमारे सहभागिता सम्भव होता हैं।

जब एक बार हम परमेश्वर के साथ संगति में आ जाते हैं तो हमारे जीवनों में वदलाव आ जाता हैं और लोगों के साथ भी हमारे संपर्क वदल जाता हैं।1युहन्ना1.5-7,में पढ़ते हैं,जो सुसमाचार हम ने उस से सुना और तुम्हें सुनाते हैं,वह यह है कि

परमेश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं।यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता हैं और फिर अन्धकार में चलें,तो हम झुठे हैं और सत्य पर नहीं चलते,पर यदि जैसा वह ज्योति में है,वैसे ही हम भी ज्योति में चले,तो एक दुसरे से सहभागिता रखते हैं और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता हैं।अन्य पक्ष में क्या आपकी वेटा का खुन् करके आप परमेश्वर के साथ सहभागिता रख सकते हे।क्या आप वेश्या के साथ और परमेशवर के साथ एक साथ सहभागिता रख सकते हे।अगर पाप पश्चताप न हो तो सहभागिता का संभव नही।एक पापी मनुष्य कैसे पवित्र परमेशवर के साथ सहभागिता रख सकता हैं।एक पापी मनुष्य पवित्र परमेश्वर के साथ और कलिसीया जो प्रभु यीशु का पवित्र सरीर कलिसीया के साथ सहभागिता नही रख सकता।हम ज्योति या अन्धकार में से कोई एक में ही हो सकते है, दोनों में नहीं।हमारे प्रभु यीशु के पवित्र लहू जो हमारे सब पापों को शुद्ध करता हैं। जव हम अपने पापों का पश्चताप करते हैं, तो हम क्षमा पाते हैं,नही तो पापों में ही रहना पड़ता हैं। हमारे सहभागिता का एक मुख्य विषय हैं,की हम अपने पापों के लिए परमेश्वर से तथा एक दुसरे से माफी मांगना ।पवित्र बाईबल वताति है,1युहन्ना1का8-10 में लिखा हैं-यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं,तो अपने आप को धोखा देते हैं, और हम में सत्य नहीं।यदि हम अपने पापों को मान लें,तो वह हमारे पापों क्षमा करने और हमें सब पापों से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी हैं।यदि हम कहें कि हम में पाप नहीं किया,तो उसे झूठा ठहराते,और उसका वचन हम में नहीं हैं।परमेश्वर के साथ और उसके संतानों के साथ सहभागिता रखने के लिए अवश्य है कि पापों के लिए पश्चताप किया जाए और माफी मांगा जाए।दिल से पाप के लिए पश्चताप में यह नही कहा जाना चाहिए कि अगर में पाप किया हो तो माफ कर दो,वलकि कहा जाना चाहिए मैने पाप किया है मुझे माफ कर दो।पाप स्पीकार में हमें चाहीए कि हम अपनी गलति मान लें और दिल से फिर से उस गलति नही करने का वादा करे।हमें कैसे मालुम होगा कि हम ने पोप किया हैं,यदि हम परमेश्वर का वचन से अपने आप को परखे,यदि यीशु मसीह जो जगत की ज्योति हैं,हमारे दिलों में वचन के द्वारा हम चमक ने दे, यदि हम परमेशवर का वचन को हमारे पांवो के लिए दीपक,और हमारे मार्ग के लिए उजियाला होने के लिए अपने आप को अर्पण करे,जव दस आज्ञा के द्वारा हम अपने जीवन को परखे, तो पवित्र आत्मा हमें अपने पापों को दिखाएगा।अपने कामों से,अपनी मुहं की वातों से और, अपने शोच-विचासे हम पाप करते हैं।जव पवित्र परमेश्वर में मैं अपने को जांचू,तव में अपनी पापों की काला दागों को देख पांऊगा। जव में अपने पापों को के लिए पूरे दिल से माफी मांगलू,तो परमेश्वर मेरे पापों माफ कर देगा।मेरे दुर्बलता में उसका वल, मेरे पाप में उसका पवित्रता,मेरे लिए काम करने लागेगा।परमेश्वर का धन्यवाद हो।परमेश्वर की सुसमाचार का सामर्थ हम पर प्रकट हैं,हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के साथ हर

काम में सहभागिता रखते हैं,खास करके उसका दुख में सहभागिता रखने के लिए वह हमें वुलाया हैं।तुम अपने श्वामी से वढ़कर नहीं हैं,इसलिये वे उसको जैसे शताया, यैसे ही वे तुम्हे भी शतायेंगे।फिलिप्पियों3.10 में पढ़ते हैं,....ताकि मैं उसको और उसका मृत्युन्जय की शक्ति को और उसके साथ दुख में सहभागी होने का मर्म को जानूं,और उसका मृत्यु की समानता को पाऊ,कि मैं किसि भी रीति से मरे हुए मे से जी उठने के पद तक पहुच सकू। उसके साथ सहभगिता कि मर्म हैं ,उसके साथ मिल कर, उसके जैसे शताया जाना।वह दुख उठाया,हम भी उसके जैसे दुख उठाने के लिए तयार रहना चाहिए।वह जव जयवन्त होता हैं, हम भी उसके साथ जयवन्त होते हैं, उसके साथ हमारी सहभागिता है।जव हम उसके साथ सहभागिता मे कष्ट उठाते हैं,तो हमारे सहभागिता उसके साथ और भी अधिक घनिष्ठ हो जाता हैं।रोमियों की पत्री का5.3-5 में पढ़ते हैं-...केवल उतना ही नहीं,वरन् हम क्लेशों में भी घमन्ड करें,यह जान कर कि क्लेश से धिरज,और धिरज से खारा निकालना,और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती हैं, और आशा से लज्जा नहीं होती क्योकि जो हमें दिया गया हैं,उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे दिलों में डाला गया हैं।

सहभागिता शव्द का गलत मतलव निकालना वहुत खेद कि वात हैं।यह उचित नहीं हैं।वचन के अनुसार परमेश्वर के साथ और एक दुसरे के साथ संगति रखने हम कलिसीया में आते हैं,हमारे पापों के बारे में और हमारे उधारक तथा उसके द्वारा पापों से छुट्कारा के बारे में पवित्र वचन से सुनते हैं।आनेवाले दिनों के लिए पवित्र परमेश्वर की वचन से अगवाई और प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

2.**पवित्र प्रभु-भोज की संस्कार में सहभागिता**-यहां हम मूर्तीपूजा तथा संसार की अन्य पापों से संपूर्ण अलग होकर पवित्र वचन के अनुसार परमेश्वर के साथ सहभागिता में आगे से आगे वढ़ जाते हैं।परमेश्व के साथ हमारा संपर्क घनिष्ठ हो जाता हैं।
सहभागिता का अर्थ है,काम करना या परमेश्वर का वचन का आज्ञाकारी वनना।पवित्र प्रभु भोज की संस्कार में हमारा सहभागिता महत्वपूर्ण होता हैं।यहां हम वचन के अनुसार हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुकरण करते हैं।हमारा सहभागिता में हमको इस दुनिया के मूर्तीऔं से तथा अविश्वासिऔं से अपने आप को अलग रखना हैं।हमारे प्रभु यीशु मसीह ने कहां हैं कि हम परमेश्वर तथा धन दोनों का सेवा या उपासना नहीं कर सकते।यीशु मसीह का मुहं का वचन बाईबल में ,मत्ती लिखित सुसमाचार में यीशु मसीह कहता हुआ पढ़ते हैं,जो मेरे पक्ष में नहीं हैं, वह मेरे विपक्ष में हैं।और जो मेरे साथ एक मन महीं होता हैं, वह मेरे से अलग होकर दुर चाला जाता हैं।यदि हम प्रभु यीशु मसीह से सहभागिता रखना चाहते ,तो अवश्य है, कि हमें मूर्ती पूजा से दुर रहना पड़ेगा।प्रेरित पौलुस कुरिन्थियों के नाम अपने दुसरी पत्री में सहभागिता के बारे में लिखता हैं,2कुरिन्थियों 6.14-18 में हम पढ़ते हैं-अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो,क्योकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल या ज्योति और

अन्धकार की क्या संगति,और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव,या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता। और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या सम्बन्ध , क्योकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं।जैसा परमेश्वर ने कहा हैं,-मैं उनमें बसुंगा और उनमें चला फिरा करूंगा,और में उनका परमेश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे।इसलिए प्रभु कहता हैं,उनके बीच में से निकलो और अलग रहो,और अशुद्ध वस्तुऔ को मत छूओ,तो में तुम्हे ग्रहण करूंगा,और मैं तुम्हारा पिता हूंगा और तुम मेरे संतान होंगे।यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का जीवित वचन हैं।हम ज्योति में हैं,और हमारे प्रभु यीशु मसीह जगत के ज्योति हैं।प्रभु यीशु मसीह में   विश्वास करने के द्वारा, परमेश्वर के अनुग्रह से उनके साथ हमारी सहभागिता हैं।हम परमेश्वर के संतान हैं,परमेश्वर के साथ हमारा क्या आशिषमय संपर्क हैं कि वह हमें अपने बेटे और बेटियां कह कर वुलाता हैं।यह हमारे सब से बड़ा सौभाग्य हैं।जैसे एक परीवार हैं,यैसा ही कलिसीया परमेश्वर का घराना हैं।कलिसीया में हमारी सहभागिता परमेश्वर के साथ और उसके पुत्र के साथ हैं।पवित्र आत्मा परमेश्वर के वचन के द्वारा कलिसीया का अगवाई करता हैं। पाप और शैतान से बचा कर पवित्र जीवन जीने के लिए सबका सहायता करता हैं।मूर्तिपूजा से और हर प्रकार कि पाप से बचा कर परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता को दृढ़ करता हैं।फिर 1कुरिन्थियों का10.6 में भी प्रेरित पौलुस विश्वासीओं को मूर्तिपूजा से दुर रहने का आज्ञा देता हैं।बाईबल का पुराना नियम में हम पढ़ते हैं कि ईस्राएल के लोग बार बार मुर्तिपूजा करके परमेशवर के विरूध पाप करके उसके सहभागिता से अपने आप को अलग किया,अव भी दुनिया भर में वहुत सारे मुर्तियां हैं,हम उनसे दुर रहने के लिए बाईबल हमें सतर्क करती हैं।मुर्तियां शिर्फ मिटि,शोना या चान्दी से बनाया गया श्वरूप हीं नहीं होता हैं,वरन् हमारे अन्दर अगर कोई गलत सोभाव तो वह मुर्तिपूजा पाप के वरावर हैं। भोग-विलास यैसा अभिलाषा,और आड़म्वर जीवन की ईच्छा मुर्तिपुजा जैसा पाप हैं जो परमेश्वर की सेवा और आराधना से मनुष्य को दुर रखता हैं।गर्व भी मुर्तिपूजा यैसा एक पाप हैं,जो मनुष्य को इतना घमन्डी बना देता हैं,कि वह अनुरग्रहकारी परमेशवर का अनुग्रह दानों भी भूल जाता हैं। हम यह न शोचे कि हम तो अच्छे और भले भले है तथा वलबम्त है कि शौतान हमें इन पापों से हमें आक्रमण नहीं कर सकता।प्रेरित पतरस विश्वास में इतना दृढ़ था कि उसने प्रभु यीशु मसीह से कहा-हे प्रभु में आप को कभी भी अस्विकार नहीं करूंगा,वरन कया हुआ,वह शपथ खा कर भी कुच्छ ही देर में प्रभु को केवल एक बार नहीं वलकि तिन बार अश्विकार किया।फिर भी यही वह मनुष्य जो प्रेरितों का नेता और मुखिया भी वन गया।1कुरिन्थयों कि10.12 में पढ़ते हैं-इसलिए जो शमझता हैं मैं स्थिर रहूं,चौकस करे कि वह काहीं गिर न पड़े।जिस दाऊद के बारे में परमेश्वर ने खुद गवाई दीया था कि वह उसका मन के अनुसार मनुष्य हैं, वह भी पाप में गिर पड़ा था।इसलिए आइए हम इस्राएल लोगों कि जैसा मुर्तिपूजा न

करे, वरन अपने अन्दर के मुर्तिओं को दुर हटा कर परमेंशवर का आज्ञाकारी वन कर जीए।आइए, हम अपने पापों के लिए पश्चताप और अंगिकार करे,सही पश्चताप यह नहीं हैं कि,मैं पकड़ा गया, इसलिए मुझे खेद हैं,वरन सच्चा पश्चताप तो यह है कि मैं पाप किया या मैं गलत किया इसलिए मुझे दुख हैं।अगर आप सचमुच में पश्चताप किया तो आप पाप से मन फिरा कर फिर से उसे पिछे मुड़ कर भी नहीं देखेंगे।बाईबल में कर असुल करनेवाला के जैसा हम अपने को नम्र वनाए,उसने कहां,हे प्रभु मैं पापी हुं, मुझ पर दया कर।उसका मन फिराना पूरे दिल से था।जव जव हम परमेशवर के साथ सहभागिता में आते हैं, तव तव हम अपने आप को दीन और नम्र वना कर आए, प्रभु परमेशवर हमें आशिष देगा। उससे असीम प्रेम और अपार अनुग्रह पाने को हम उसके कदमों में आते हैं।

परमेशवर के साथ हमारी सहभागिता आशिषमय हैं,जब हम उसके साथ एक आत्मा हो जाते हैं,वह हमारा पिता और हम उसका संतान, कितना धनिष्ठ संपर्क हैं,जब हम पवित्र प्रभु-भोज में हमारे प्रभु यीशु मसीह का पवीत्र लहू पान करतेहैं,और पवित्र सरीर को हम खाते है, जो हमारे लिए कृश पर वलिदान के रूप में अर्पण किया गया हैं।1कुरिन्थियों10. 16 में पढ़ते हैं-वह धन्यवाद का कटोरा , जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, कया मसीह की लहू के सहभागीता नहीं।वह रोटी जिसे हम तोड़ते है ,कया वह मसीह की देह का सहभागिता नहीं।जो विश्वास के साथ और पूरे दिल के साथ पवित्र प्रभु भोज में भाग लेते हैं उनके लिए प्रभु भोज आशिष का कारण वन जाता हैं।

हमारे पापों से छुट्कारा पाने के लिए प्रभु यीशु मसीह की देह और लहू में हिंसा लेना कितना सोभाग्य कि वात हैं।उसके द्वारा हम परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संपर्क में आजाते हैं।जैसे विश्वास के साथ पवित्र प्रभु भोज में भाग लेना आशिष की वात हैं, ठिक् यैसे ही अविश्वस और अप्रस्तुति के साथ उसमें भाग लेना उससे बड़ कर खतरनाक हैं।1कुरिन्थियों 10 अध्याय में प्रेरित पौलूस दुनियां की पाप और मुर्तिपूजा से अलग हो कर , प्रभु भोज के द्वारा परमेश्वर के साथ सहभागिता रखने को लोगों को सलाह देता हैं।फिर अध्याय 11में वह विश्वास के साथ और पूरे दिल के साथ प्रभु भोज में भाग लेने से मिलने वाला आशिषों के बारे में तथा अविश्वास और अप्रस्तुति के साथ उसमें भाग लेने से मिलने वाला श्राप के बारे में वर्णन करता हैं। 1कुरिन्थियों11.28-30 में लिखा है-इसलिए मनुष्य अपने को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए,और इस कटोरा में से पीए।क्योकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने वह इस खाना-पीने से अपने उपर दन्ड लाता हैं।इसी कारण तुम में से वहुत निर्बल और रोगी हैं,और बहुतसे सो भी गए।जैसे सरीर एक हैं, परन्तु अंग अनेक हैं,ठिक यैसे ही हम सब जो प्रभु भोज लेते हैं,मसीह में सब मिलकर एक सरीर हैं,और हर एक व्यक्ति एक एक अंग हैं।1कुरिन्थियों 10.17 में लिखा हैं-इसलिए

कि एक ही रोटी हैं,तो हम भी जो बहुत है मसीह में एक देह हैं।क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं। प्रभु भोज में हमारे सहभागिता दो दिशा में होता हैं, उपर और समान्तर,उपर का अर्थ परमेशवर के साथ ,और समान्तर का मतलव एक दुसरे के साथ।सहभगिता एक शब्द ही नही हैं,वरन् यह एक काम के रूप में हैं। सहभागिता में पापों का श्विकार किया जाता हैं, और परमेशवर की वचन का आज्ञाकारी हो कर जीना उचित हैं। हम देख सकते है कि कई लोग लम्बा समय से प्रभु भोज में शामिल नही होते,इसका मतलव है, उनका अन्दर परमेशवर के साथ सहभागिता रख ने में रूकावट करने वाला दुष्ट शक्ति हैं। हर व्यक्ति हर पापों से दुर रह कर लगातर प्रभु भोज में सामिल होने के द्वारा परमेशवर के साथ सहभागिता रख सकता हैं।**3.सहभआगिता का अर्थ वाटंना या वितरण करना हैं।**यरूशलेम के कलिसीया के विश्वासीऔं प्रेरितों से शिक्षा पाने,और संगति रखने और रोटी तोड़ने,और प्रार्थना करने में लौलिन रहते थे।वे सब मिलकर प्रभु यीशु मसीह में एक थे।उनको चलाने वाला प्रभु यीशु मसीह खुद थे,उतना ही नही, वे एक दुसरे का मदत भी करते थे।प्रेरितों2.44-46-में लिखा हैं-सब विशवास करनेवाले इकड्ठेरहते थे,औऱ उनकी सब वस्तुएं साझे में थी।वे अपने-अपने सम्पत्तिऔर सामान बेच बेचकर जैसी जिसकी आवश्कता होती थी बांट दिया करते थे।वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सिधाई से भोजन किया करते थे।फिर प्रेरितों4.34-35 में पढ़ते हैं-उनमें कोई भी दरिद्र न था।क्योंकि जिसके पास भूमि य़ा घर थे वे उनको बेच बेचकर बिकी हुई वस्तुऒं का दाम लाते और उसे प्रेरितों के पांवों पर रखते थे।और जैसे जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बांट दिया करते थे।यह बांटना सहभागिता का एक मुख्य भाग है।क्या हम भी अपनी कलिसीयाओं में भी यैसा करते हैं। इस कलिसीया में दोनो वस्तुओं का अर्थात आत्मिक तथा भौतिक वस्तुओं का बांटना हम देखते हैं। यह कलिसीया की सहभागिता का एक अभीन्न अंग हैं, क्या हमारे कलिसीयाओं में इस प्रकार का सहभागिता देखा जा सकता हैं।मैं सदा परमेश्वर का धन्यवाद करता हुं, और अपनी प्रार्थनाओं में भी तुझे स्मरण करता हूं।क्योकि मैं तेरे उस प्रेम और विश्वास की चर्चा सुनता हूं, जो सब पवित्र लोगों के साथ और प्रभु यीशु पर हैं।मैं प्रार्थना करता हूं,कि विश्वास में तेरा सहभागी होना,तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान में,मसीह के लिए प्रभावशाली हो फिलोमोन वचन4-6,।यहां मुनिव और दास के बिच मसीह प्रेम की सहभागिता हम देखते हैं। दास अपने श्वामी के बारे में श्वष्ट रूप से वोलता हैं।और श्वानी अपने दास के उपर प्रेम और विश्वास का प्रदर्शन करता हैं।पौलुस कहता हैं,वचन21 में,मैं तेरे आज्ञाकारी होने का भरोसा रखकर तुझे लिखता हूं,और यह जानता हूं कि जो कुछ मैं करता हूं, तु उससे कही बढ़कर करेगा।क्या हम फिलोमोन और प्ररित पौलुस के जैसा बन सकते हैं,हम सब मिलझुल कर रहकर अपने अपने दुख- सुख,भला-बुरा,कष्ट-नष्ट

हर विषय आपस में बांटना चाहिए।एक दुसरे के सुख-दुख में सहभागी बन कर रहे,और एक दुसरे में अपने अपने वोझ तथा दर्द को उठाकर एक दुसरे का सहायाता करना न भुले।विशास,प्रभु में भोरोसा और वचन के अनुसार हर आत्मिक आशिषों के बारे में दिल एक दुसरे से वितरण करना अच्छी बात हैं।हमारे अदृश्य परमेश्वर पर विश्वार में स्थिर रहने में और आनेवाला स्वर्ग राज्य के बारे में,हम अपने काम में और बातो में एक दुसरे को उत्चाहित और प्रत्चाहित करना उचित हैं।पवित्र वचन के अनुसार विश्वास को अच्छी तहरा से समझे और दुसरों का विश्वास का वढ़ाने के लिए उनका मदत करना कभी भी न भुले।ईब्रानियों की पत्री 11.1में बाईबल वताती हैं,अव विश्वास आशा की वस्तुऔं का निश्चय,और अनदेखी वस्तुऔं का प्रमाण हैं।सहभागिता का अर्थ यह हैं, कि आत्मिक और भौतिक वस्तुऔं परस्पर आपश में वांटकर एक साथ मिलझुल कर एक मन हो कर जीना हैं। 2कुरीन्थियों 8.1-5 में, लिखा है,अब हैं भाईयों, हम तुम्हें परमेश्वर के उस अनुग्रह का समाचार देते हैं जो मकिदुनिया की कलीसिया पर हुया हैं। कि क्लेश की बड़ी परीक्षा में उसके आनन्द और भारी कंगालपन में उसकी उदाररता बहुत बढ़ गई।उसके बिषय में मेरी यह गवाही हैं, कि उन्होने अपनी सामर्थ भर वरन् सामर्थ से भी वाहार मन से दिया हैं।और दान में और प्रभु की लोगों की सेवा में भागी होने के अनुग्रह के बिषय में, हम से बार-बार विनति की। और हमने जैसे आशा की थी, वैसे ही नहीं वरन् उन्होंने प्रभु को फिर परमेश्वर की ईच्छा से हम को भी अपने आप को दे दिया।ईस वचन में हम जो दान के बारे में पढ़ा हैं, वह कलीसिया की हमेंशा लि जानेवाली दान नहीं हैं। यह दान विशेसित दान हैं जो यरूशलेम में रहने वाले पवित्र जनों के लिए संग्रह की गईथी।ईन वचोनो कों हम अपने कलीसियाऔं भी शिखा सकते हैं,परमेश्वर के सुसमाचार प्रचार के लिए दान देने के लिए विश्वासिऔं को प्रत्साहित कर सकते हैं। हम ये कभी भी व भुले कि सहभागिता में सेवकों का जरूवतों को हमें ही पूरा करना हैं।प्रभु यीशु मसीह में वचन के अनुसार हमारे सहभागिता जो है हम यथा सम्भव उनका मदत और सहायता करना चाहिए। भारत देश में अनाथ वच्चों के विच में हमारे सेवकाई के वारे में हम कह सकते हैं कि यह हमारे कार्य नही हैं,क्योकि भारत देश अमेरिका से वहुत दुर में हैं। वे लोग हम से वहुत दुर में है, उनको कोई नही देखा, हमारे अमेरिका देश में भी तो वहुत अनाथ बच्चे हैं तो, क्युं हम उनका सहायता नही करना चाहिए। हैं भाईऔं हम उनसे दुर है और हम उनको कभी नहीं देखा फिर भी वे हमारे प्रभु यीशु मसीह में हमारे बच्चे है, इसलिए हम भारत के बाच्चों का भी मदत करना चाहिए। हम पवित्र प्रभु भोज के संस्कार के द्वारा उनके साथ एक वन जाते हैं। (कया तुम नही जानते कि हम सव जो वपतिस्मा के द्वारा मसीह यीशु के साथ एक हुए,वपतिस्मा के द्वारा उसके मृत्यु मैं भी सहभागि हुए,इसलिए हम वपतिस्मा के द्वारा उसकि मृत्यु में सहभागि होकर उसके साथ गाड़े गए हैं, जिससे कि पिता के महिमा के द्वारा जैसे मसीह

जिलाया गया था वैसे ही हम भी जीवन की नयी चाल चले। कयोंकि यदि हम उसके साथ उसकि मृत्यु की समानता में एक हो गए हैं, तो निश्चय ही उसके जी उठने की समानता में भी एक हो जाएंगे।)(रोमियों 6-3-5)उपर वचन के अनुसार हमारे भारत में CLCI और BELC के द्वारा यत्न लियेजाने वाले छोटे बच्चे हमारे साथ एक हैं। हमारे प्रभु यीशु मसीह में वे हमारे भाई और वहेने हैं।(जब में यह कहता हूं कि जो थोड़ा वयगा वो थोड़ा ही काटेगा, और जो अधिक बोएगा वो अधिक काटेगा। प्रत्येक जन जैसा उसने अपने मन में निश्चित किया हैं,वैसा ही करे, न कुढ़कुढा कर न तो दवाव से कयोकि परमेश्वर हर्ष से देने वालो से प्रेम करता हैं।और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह वहतायत से तुम्हे दे सकता हैं। जिससे कि तुम सदैव सब वातो में परिपूर्ण रहो, और सब भले कामों के लिए तुम्हारे पास भरपूरी से हो। जैसा लिखा हैं, उसने चारो ओर विखेरा,उसने दरिद्र को दिया, उसकी धार्मिता सदा वनी रहती हैं।अब वह जो वोने वालो को बीज और भोजन के लिए रोटी देता हैं,वोने के लिए तुम्हे बीज देगा और तुमारा बीज को बढ़ाएगा और तुम्हारी धार्मिकता की फसल की बृद्धि करेगा।तुम सब प्रत्येक बातो में धनि किए जाओगे कि उदार वनो जिससे हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो। क्योकि इस-शेवा कार्य के द्वारा न केवल पवित्र लोगो की धटीया पूरी होती हैं,वरन् परमेश्वर को बहूत धन्यवाद देने की उमण्डती रहती हैं।इस सेवा को प्रमाण मानकर वे परमेश्वर की महिमा करेगें। कयोंकि तुम मसीह के सुसमाचार को आज्ञाकारीता से अगिंकार करते और उसके तथा सबके लिए उदारतापूर्वक दान देते हो।) (2कुरीन्थियों 9का 6-13)। जो जैसे बोता हैं,वो वैसे ही काटेगा इस मे कोई संदेह नही हैं।जैसे आप वोएगें वैसे ही आप काटेगें,इसमे कोई संदेह नही हैं। यरूशालेम की कलिसीया अच्छी तराह से जानती थी कि सहभागिता का अर्थ क्या हैं, वे अच्छा वोया और माकेदनिया की कलिसीया के द्वारा अच्छा काटे।मसीह में एक होने के नाते हम एक दुसरे का सहायाता करना बहुत जरूरी है, क्योकि परमेश्वर हम से वैसे करने को आग्रह करता हैं।इस सहभागिता के वारे में पौलुस प्रेरित के द्वारा रोमियो के कलिसीया को सहभागिता के वारे में परमेश्वर समझाता हैं, लिखा हैं,(परन्तु अभी तो मैं पवित्र लोगो की सेवा करने के लिए यरूशलेम जा राहा हूं। क्योकि मैसीडोनिया और अखया-वासीयो ने उदारता से यरूशलेम के पवित्र लोगों के मध्य कंगाल के लिए दान दिया ।उन्हे ऐसा करना अच्छा लगा,और वे उनके ऋणि हैं,क्योकि यदि गैरयहूदी उनके आत्मिक कामो में सम्मिलित हूए है तो उन्हे भी उचित है कि भौतिक वस्तुओं से उनकी सेवा करे। इसलिए मैं यह काम पूरा करके और उनको श्वयं ही दान सौप कर तुम्हारे यहा होता हुआ स्पेन चाला जाऊगां।)रोमियों 15का 25-28तक)कुच्छ लोग यरूशलेम में हैं जो शोचते है कि वहुत आयत से वोना कोई जरुरी नेही है, जैसे कि हनान्हा और सफिरा के वारे में प्रेरितो कि काम 5 अध्याय में पढ़ते हैं।हम देखते है कि सहभागिता एक जिवीत,सक्रिय और

गतिशील विषय हैं।यह केवल अक्षर नही है जिस में शक्ति नही होति,वरन् सहभागिता में शक्ति हैं।सहभागिता में सुसमाचार का सामर्थ हैं, क्योकि सुसमाचार सजीव, सामर्थी होता है।सहभागितता शक्तिशाली होता हैं, क्योकि यह हमारे प्रभु यीशु मसीह की प्रेम के उपर आधारित है, और यीशु का प्रेम में शक्ति हैं।हम अपने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं,अपने पापो का अंगिकार करते हैं,साधु जनो के लिए प्रार्थना करते हैं,प्रभु भोज की पवित्र संस्कार में भाग लेते है, तथा परस्पर अपने भौतिक वस्तुऔं तथा विश्वास का वितरण करते **हैं।4.भाग लेना-हमारे सहभागिता व्यक्तिगत संपर्क के रूप में प्रगट होना चाहिएः-**हीसा लेना,प्रभु-भोज में भाग सेना ईत्यदि को स्मरण करिए,कोई अगर विमार में है, और हम उसके लिए विना प्रार्थना किये रह सकते हैं क्या। मत्ति 18 अधाय में हमारे प्रभु यीशु मसीह क्या कहता है स्मरण करे,हम समुद्र रूपी संसार में द्बीप वासी नही हैं, सुसमाचार प्रचार के काम के लिए हम परस्पर सहभागि हैं। सह भागिता का मतलव है सहभागि वनना य भागिदार वनना,लिखा है-(जब कभी मैं तुम्हे स्मरण करता हुं अपने परमेश्वर को धन्यवाद देता हुं तथा आनन्द के साथ तुम्हारे लिए सदा प्राथना करता हुं।क्योकि पहले ही दिन से आज तक तुम सुसमाचार में मेरे सहभागी रहे हो।)फिलिप्पियों1का 3-5।हम ये नही जानते हैं कि एसिया माईनर और ग्रेक में सुसमाचार के प्रचार काम के लिए प्रत्येक कलिसीया प्रेरित पौलुस को दान दिया करते थे या नही।कुछ लोगो ने उनके लिए प्रार्थना किया करते थे और दान भी दिया करते थे। प्रेरित पौलुस के साथ उनका>सहभागिता था। हम ये जानते हैं कि पौलुस का सुसमाचार प्रचार काम सिरीआ के अन्तकिया से सुरू हुआ था।यहां से ही पौलुस और वरनवास पवित्र आत्मा के द्बारा पहला सुसमाचार कार्य के लिए भेजे गये।अन्य एक कलीसिया जो पौलुस का सुसमाचार काम के लिए मदद कि थी वह हैं,फिलिप्पि की कलीसिया।वहां एक धनी स्त्री की घराने और एक कैदी के घराने के द्बारा कलीसिया का आरम्भ हुआ। पौलुस अपने दुसरा मिशनेरी यात्र पर मकेदनिया में आकर एक दर्शन पाता हैं,कि एक व्यक्ति उसे मिलने आता हैं और वहां पर एक कलीसिया का स्थापना हो जाता है। फिलिप्पि के कलीसिया हमेशा पौलुस का सुसमाचार का प्रचार सेवा में मदद करति थी चाहे वह उनके विच हो या नही।लिखा हैं,(-तौभी तुम ने भला किया कि मेरे क्लेश मे मेरे सहभागी हुए।हे फिलिप्पियों तुम आप भी जानते हैं कि सुसमेचेर प्रचार के आरम्भ में, जब मैं मकिदुनिया से विदा हुआ, तव तुम्हे छोढ़ और किसी कलीसिया ने लेने देने के विषय में मेरी सहायाता नही की। इसी प्रकार जव में तिसलुनिके में था तव भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिये एक वार क्या वरन् गो वार कुछ भेजा था।यह नही कि मैं दान चाहता हुं, परन्तु में ऐसा फल चाहाता हुं, जो तुम्हारे लाभ के लिए वढ़ता जाए।मेरे पास सव कुछ हैंपरन् बहुत आयत से भी हैं, जो वस्तुएं तुम ने इफ्रदीतुस के हाथसे भेजी थी उन्हे पाकर मैं तृप्तहो गया हुं , वह तो सुखदायक सुगन्ध ग्रहण करने योग्य वलिदान ,जो

परमेश्वर को भाता हैं।)(फिलिप्पि4का14-18,)हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मिलकर उनके अनुग्रहकारी हाथो के द्वारा सलीसिया के साथ संगति रखना कितना खुशी की वात हैं। आज हम भी सहकर्मी हैं,हम उनका भाई हैNCLC, CLCI BELC में जो हम से शो माईल दुर में भारत और थाईलान्ड जैसे देशो में हैं।फिलिप्पि के कलीसिया के जैसे हम भी सुसमाचार की प्रचार के लिए मदद भेजते रहते है। हम जब सव कलीसिया एकत्रीत होते हैं, तव जैसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने कहा हैं कि सुसमाचार सारे दुनिया में प्रचार कार्य के लिए हम यथा सम्भव कोशीस करते हैं। हम सब मिल कर परमेश्वर की पवित्र कलीसिया को शुद्ध और साफ रखने को हर सम्भव कोशीस करते हैं।हम जो भी करते हैं, सव कुछ परमेश्वर के वचन के अनुसार करते ता कि परमेश्वर का नाम की महिमा हो।हमारे दिलो में और हाथो में परमेश्वर का वचन ले कर दुसरो को सिखाते हैं,उपदेश देते हैं,समझाते हैं, तथा धर्म शुक्षा देते हैं।हम अपने आप से ये पुछे कि सहभागि हैं, पूरा, अधा या फिर नीःसंदेह शान्त रेहेने वाला हैं।एक कलीसिया में सदस्य वनना कोई सेर वजार में या कम्पानी में हींसा लेने जैसे नही हैं।पवित्र आत्मा हमारे विच इस सहभागिता को वचन के अनुसार वनाई रखने में हमारे सहयाता करता हैं।लिखा हैं,-फिलिप्पियों अध्याय 2 का वचन 1-2, में (अतःयदि मसीह में कुछ शान्ति,और प्रेम से ढ़ाढ़स,और आत्मा की सहभागिता,और कुछ करूणा और दया हैं।तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो,और एक ही प्रेम,एक ही चित और एक ही मनसा रखो।)यह शिर्फ पवित्र आत्मा हैं, जो हमारे मध्य शही सहभागिता वनाये रखने में हमारा मदद करता हैं। सव से पहले वह हमें मसीह में लाता हैं और वाद में पवित्र वचन के अनुसार हमारा सहभागिता में एक मन और चित होने के लिए हमारा सहायता करता हैं। केवल पवित्र आत्मा हैं, जो हमारे कलीसियाओं में सहभागिता का गठन करता हैं और चलाता हैं।यह पवित्र आत्मा का एकता हैं, जो शान्ति का वंधन से जुड़ा हुआ हैं।इफिसियः 4 का 1-7 में पढ़ते हैं,(इसलिये मैं जो प्रभु में बन्दी हूं,तुम से विनती करता हूं,कि जिस बुलाहाट से तुम बुलाए गए हो,उसके योग्य चाल चलो।अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित और धीरज धरकर प्रेम से एक दुसरे को सह लो।और मेल कि बन्धन में आत्मा कि एकता रखने का यत्न करो।एक ही देह हैं,और एक ही आत्मा, जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाएजाने से एक ही आशा हैं।एक ही प्रभु हैं, एक ही विश्वास,एक ही बपतिस्मा और सब का एक ही परमेश्वर और पिता हैं, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में हैं।पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला हैं।) क्या हम ईछुक् हैं जो आत्मा का सहभागिता हम में उसको वनाये रखने के लिए।सहभागिता का अर्थ .यह है कि हम मिल के चाले,हम मिल कर गठन करे,हम में से हर एक को परमेश्वर ने अलग अलग वरदान दिये हैं, उन वरदानों को हम सामुहिक उन्नति के लिये इस्तेमाल करना उचित हैं।प्रेरीत पौलुस

सहभागिता के बारे में समझाने के लिए मनुष्य कि सरीर का उदाहरण देता हैं,जैसे सरीर में अनेक अंगे हैं,पर सरीर कि उन्नति के लिए सब मिल कर अपने अपने काम करते हैं।ठिक वैसे ही मसीह कलीसिया हैं।इफिसियों का4अध्याय,15-16,में पढ़ते हैं,(वरन् प्रेम में सचाई से चालते हूए सब बातों में उसमें जो सिर हैं, अर्थात मसीह में बढ़ते जाओ।जिससे सारी देह, हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर , उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक् ठीक् कार्य करने के द्वारा उश में होता हैं,अपने आप को चढ़ाती हैं।कि वह प्रेम उन्नति करती जाए।जव हम अपने वचन के अनुसार देखते हैं तो प्रभु में हमारा सहभागिता सच् मुच् एक चमत्कार हैं। सहभागिता के इस अध्याय में हमने एक विषय का उतना ध्यान नही दिया जितना देना चाहिए था। हम एक विषय पर जोर नही दिया जाहा पर जोर देना था। शौतान के बारे में,शौतान हमेशा हमारे सहभागिता को तोड़ना चाहता हैं।जब पवित्र आत्मा हमेशा जोड़ना चाहता हैं।हमारा प्रभु यीशु के साथ तथा अपने विच जो सहभागिता हैं उसे विगाड़ना चाहता हैं शौतान। वह हमेशा यह चाहता हैं कि हमे मसीह के संगति से अलग करे। अपने चालो में फसाकर वह हमे आक्रमण कर ने कि ही सम्भव कोशीस करता हैं। वह हमारे विच झगड़ा और दलभेद और विभिन्नता का विज वोता हैं।उस का चाले चालाखी,चतुराई और अलग अलग होता हैं। शौतान की चात के कारण आज मसीह संप्रदाय बहुत से भाग में हैं। शौतान अपनी हर संभब कोशीश करता हैं कि सहभागिता में फुट लाए, और कलीसिया में मतभेद का पैदा कर सके। आप को सहभागिता से पूर्ण रूप से अलग करने के लिए,नही तो आप को एक अक्षम सदस्य के रूप में खड़ा करने को हर संभब कोशीश करता हैं। बाईबल वताति हैं,जो लोगों के आगे हमारे यीशु को प्रभु कहकर अंगिकार करेगा , पिता परमेश्वर उसे स्वर्ग में अंगिकार करेगा,वरन् जो अंगिकार नही करेगा उसे पिता परमेश्वर भी श्वर्ग में अंगिकार नही करेगा। परमेश्वर वचन को हमेशा मगन करने द्वारा, और प्रार्थना के द्वारा ही हम शौतान की चालों से बच कर परमेश्वर के साथ तथा उसके पवित्र जनो के साथ सहभागी वन सकते हैं।

हम ने इस अध्याय में अध्ययन किया कि सहभागिता एक कार्यकलाप हैं।यह पवित्र परमेश्वर के साथ, हमारे प्रभु यीशु के मध्य, विश्वास के द्वारा पापी मनुष्य का मिलन हैं, जो पवित्र परमेश्वर खुद गठन करता हैं।हमारे सहभागिता शिर्फ ऊपर परमेश्वर से ही नही, वरन् नीचे मनुष्यों के मध्य भी हैं, जो प्रभु यीशु पर विश्वास करते है। जब हम पवित्र प्रभु भोज में भाग लेते है, तब हम सब परमेश्वर के साथ तथा एक दुसरे के साथ मसीह में एक हो जाते हैं। हमारे इस सहभागिता में हम विश्वास में तथा एक दुसरे का सहायता करने में हमेशा तयार रहते हैं। अपने भोतिक वस्तुओं से और प्रार्थना में अन्य भाईयों और वेहोनों का मदत करते हैं जो कष्ट में और कठिनाई में है।शिर्फ उतना ही नही हम हमेशा परमेश्वर का

सेवकों का सुसमाचार प्रचार काम में यथा संभव सहायाता करते हैं। पवित्र आत्मा इस पवित्र कार्य के लिये, हमें बुलाता हैं,एकत्रित करता हैं, प्रज्जोलित करता हैं और पवित्रता में हमे स्थिर करता हैं।(प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ सर्बदा होती रहे)।2कुरिन्थियों 13का14 । आमीन।

.

Filename: सहभागित1
Directory: C:\Users\Deepak\Documents
Template:
C:\Users\Deepak\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dot
Title: सहभागिता
Subject:
Author: Deepak
Keywords:
Comments:
Creation Date: 31-12-2009 08:51:00
Change Number: 11
Last Saved On: 13-02-2010 03:47:00
Last Saved By: Deepak
Total Editing Time: 1,553 Minutes
Last Printed On: 16-02-2010 13:13:00
As of Last Complete Printing
Number of Pages: 13
Number of Words: 4,520 (approx.)
Number of Characters: 25,766 (approx.)